International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(II), October - December, 2022, pp. 178-181

जयपुर के अल्बर्ट हॉल संग्रहालय में संग्रहित जोधपुर बारहमासा के चित्रों का विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ. तनूजा सिंह*
रुकैया खानम**

सार

भारत में राजाओं का शासन रहा, अपने शासन के दौरान राजाओं ने कई साहित्यिक ग्रंथों का चित्रण कराया, उन्ही में से एक केशव दास की कविताओं के आधार पर बारहमासा का चित्रण हुआ। राजस्थान व पहाड़ी शैली में बारहमासा का मुख्य रूप से किया गया तथा जोधपुर शैली में बारहमासा का चित्रण बड़ी रूमानी प्रकार से किया गया है।जयपुर के अल्बर्ट हॉल संग्रहालय में 1800 ई. में निर्मित जोधपुर बारहमासा जिसमें ऋतुओं जैसी अदृश्य अनुभव को चितेरों द्वारा चित्रों के रूप में प्रतिकात्मक विशेषताओं के साथ प्रस्तुत किया गया, जिसके उदाहरण हम आज भी अल्बर्ट हॉल जैसे संग्रहालयों में देख सकते हैं।

शब्दकोशः *आज़ादी, साहित्यिक ग्रंथ, बारहमासा, चित्र, संग्रहालय।*

प्रस्तावना

भारत में कई महापुरुषों ने जन्म लिया जिन्होंने अपनी विद्वत्ता से महान साहित्यिक एवं कलात्मक रचनाओं का निर्माण किया, जिनकी महत्ता का ज्ञान वर्तमान में इनके अस्तित्व से होता है। शासकों के निर्देश पर साहित्यिक ग्रंथों का बड़ी सुन्दरता से चित्रण किया गया। भारतीय चित्रकला में मौसम एवं ऋतुओं के प्रभाव से बदलते पेड़–पौधों को चित्रित करने की प्राचीन परम्परा रही है। मानव और प्रकृति के मध्य का संबंध भारत में मौलिक रहा है, बारहमासा के चित्र उसी परम्परा के उदाहरण हैं। बरहमासा की पेंटिंग भारतीय कवियों और चित्रकारों के कलात्मक और साहित्यिक प्रयासों को सहसंबद्ध करने का बहुत ही सुन्दर प्रयास प्रतीत होता है, जो ऋतुओं के चक्र को चित्रित कर उसकी विशेषताओं को दर्शाता है। हिन्दी साहित्य में रीतिकालीन कवि केशवदास का बारहमासा सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, इनका आधार 1601 ई. में रचित हिन्दी ब्रजभाषा का काव्य साहित्य कविप्रिया है, जिस पर आधारित राजस्थानी व पहाड़ी शैली में चित्रावलियाँ बनीं।[प] ये लौकिक गीत बड़े प्रचलित हुए, ब्रजभाषा –काव्य के बारहमासा विषयों ने देशी चित्रकारों को अत्यधिक आकर्षित किया। उन्होंने प्रेम भावना को नवीन ढंग से व्यक्त करने का माध्यम पा लिया।[पप] यह अद्भुत बात है कि कलाकारों ने ऋतुओं जैसी अदृश्य अनुभव के सिद्धान्तों को चित्रकला जैसी दृश्य–कला द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया।

बारहमासा का चित्रण विशेष रूप से राजस्थान में मेवाड़, बूंदी, कोटा, जोधपुर व पहाड़ी में कांगड़ा, बासोहली, चम्बा आदि में हुआ है। जोधपुर शैली में बारहमासा के चित्रों को बड़े रूमानी प्रकार से चित्रित किया गया है, जिसमें सभी बारह ऋतुओं का वर्णन किया गया है।[पपप]जयपुर के अल्बर्ट हॉल संग्रहालय में हमें 1800 ई. में निर्मित जोधपुर बारहमासा का सेट देखने को मिलता है, जिसमें मारवाड़ चित्रकला की विशेषता को देखा जा सकता है तथा जोधपुर बारहमासा चित्रों के स्वरूप को समझा जा सकता है।

* शोध निर्देशिका, प्रोफेसर, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** शोद्यार्थी, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

राजस्थानी चित्रों में प्रकृति का अंकन दो प्रकार से हुआ है –एक सामान्य पृष्ठभूमि के रूप में और दूसरा षड्ऋतु, बारहमासा अथवा अष्टयाम चित्रावली के रूप में। चित्रों में जो दृश्य अंकित किये गये हैं उन्हें दो भागों में विभाजित किया जा सकता है : एक भाग में महल अथवा मण्डप दिखाया जाता है और दूसरे भाग में प्राकृतिक दृश्य, भयानक और जंगली दृश्यों में भी प्रायः यही संयोजन मिलता है। बहुत कम चित्र ऐसे हैं जिनमें महल, मण्डप अथवा अनाथ कनात आदि न दिखाये गये हों।[पअ] अल्बर्ट हॉल संग्रहालय में संग्रहित जोधपुर बारहमासा में भी हमें इसी प्रकार का संयोजन देखने को मिलता है, इस सेट में जोधपुर शैली की विशेषताओं के अनुरूप इन वास्तु या महलों को सफेद रंग से ही बनाया गया है परन्तु कार्तिक मास के चित्र में आकाश के समरूप स्लेटी रंग से निर्मित है जिसे आप नीचे दिए गए चित्र में देख सकते हैं।

चित्र संख्याः–1 मास कार्तिक

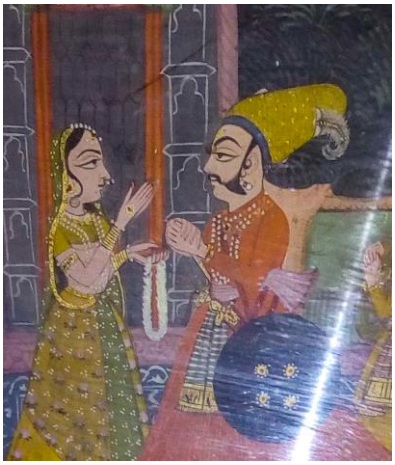

चित्र संख्याः–2 मास फाल्गुन

जोधपुर बारहमासा के इस सेट में आकृतियों को लम्बा बनाया है। आर. ए. अग्रवाल के अनुसार जोधपुर शैली में पुरूषाकृति के मुख–मण्डल शौर्य छटा से ओतप्रोत है। उनकी आगे को निकली हुई नासिक, अरूणाभ बड़ी ऑखें, कान तक खिंचीं हुई मूंछें व शिखराकार अलंकृत पगड़ियॉ व नारी आकृति लम्बी आभूषणों से सजी है। मुखमंडल में ललाट निकला हुआ, कपोलों तक झूलती हुई सर्पाकार अलकावलियॉ, व खंजनाकृति नेत्र वाली बनी है।[अजो] इन चित्रों में दिखाई देती है।

बारहमासा की विशेषता है कि चित्रों को प्रतीक विधि से चित्रित किया जाता था, इस जोधपुर बारहमासा के सेट में भी इसी विधि का प्रयोग हुआ है, जैसे किः

मास चैत्र के चित्र में केशवदास की कविप्रिया में चैत्र मास की कविता में खिले हुए पेड़ व नदियां और झीलों को पानी से भरा हुआ वर्णित किया है। सम्भवतः इसी कारण पृष्ठभूमि में स्वच्छ उद्यानों एवं स्त्रियों के समूह को दर्शाया है, जिसमें से एक स्त्री के सिर पर चार मटकें हैं जिसके द्वारा पानी से चित्र का सम्बन्ध स्थापित किया गया है। चित्र में महल की अग्रभूमि में नायक व नायिका को अंकित किया है, जिसमें नायक के शौर्य को दर्शाने के लिए उसे सशस्त्र दिखाया है तथा नायिका को समूह के साथ दर्शाया है कविता के आधार पर तोता और मैना को भी अंकित किया है। जोधपुर के लघु चित्र में एक पुरुष और एक महिला को एक दूसरे के विपरीत खड़े अंकित किया हैं। नायक एक धनुष रखता है, जो इंगित करता है कि वह जाने के लिए तैयार है, जबकि महिला उसे घर पर रहने के लिए मनाने की कोशिश करती है।[अप]

बैशाख में पहाड़ों के पीछे चमचमाता सूर्य इस ऋतु की गर्मी को दर्शाता है, पृष्ठभूमि में मंदिर का चित्रण हुआ है जहां एक स्त्री को शिवलिंग की पूजा करते दिखाया है, साथ ही मंदिर में भगवान शिव के वाहन नंदी को भी चित्रित किया है। इस दृश्य के आगे दो नाव सवारों को बाईं दिशा में नाव चलाते हुए बनाया गया है। चित्र के अग्रभाग में महल का दृश्य है, जहां नायिका गर्मी के कारण नायक पर पंखे से हवा कर रही है।

ज्येष्ठ में गर्मी की भीषणता को दिखाया गया है, जहां कवि ने कहा है कि ''तालाबो को सूखा हुआ देखकर हाथी मंद से मुक्त हो जाता है तथा उनकी सूंड की कुण्डली में सांप तथा पेट के नीचे सिंह सोता रहता है (गर्मी के कारण उन्हें अपने बैर का ध्यान ही नहीं रहता)''।[अपप] इसे दर्शाने के लिए चित्रकार ने पृष्ठभूमि में गर्मी से पीले पड़े मैदान में हाथी को दर्शाया है जिसकी सूंड़ में सांप है व उसकी परछाई में सिंह सो रहा है, हाथी के पीछे बड़े पहाड़ के ऊपर सूर्य अपनी तेज़ किरणें बिखेर रहा है। अग्रभाग में नायक, नायिका को महल के अंदर चित्रित किया गया है।

आषाढ़ के चित्रों में महल के अग्रभाग में नायक, नायिका खड़े हैं व महल की ऊपरी मंजिल में, सम्भवतः कविप्रिया की कविताः– ''इस महीने मे श्रीनाथ (भगवान् नारायण) ने भी, लक्ष्मी को साथ लेकर शय्या पर सोना स्वीकार किया है।'' के आधार पर विष्णु व लक्ष्मी को बिस्तर पर लेटे दर्शाया है। पृष्ठभूमि में दो तपस्वीयों का अंकन हुआ हैं तथा वृक्षों को आम के फलों से भरा हुआ बनाया गया है।

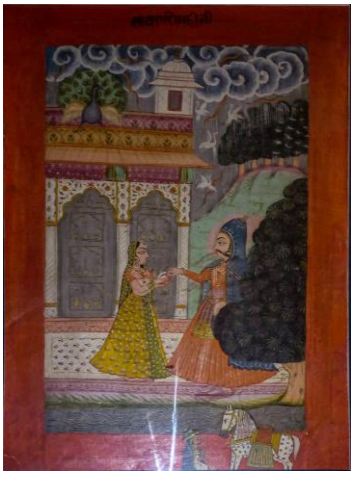

चित्र संख्याः–3 मास श्रावण

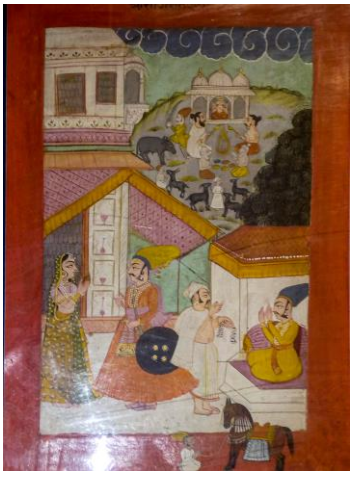

चित्र संख्याः–4 मास अश्विन

श्रावण एवं भाद्रपद के अंकन में इन चित्रकारों का मन विशेष रमा है। डॉ. रीता प्रताप के अनुसार जोधपुर शैली की विशेषता है कि मेघों को गहरे काले रंग में गोलाकार दिखाया है तथा विद्युत रेखाओं को सर्पाकार रूप में बनाया गया है।[अपपप] ये विशेषता हमें इन दोनों चित्रों में दिखाई देती है। इन में मेघों से आच्छादित आकाश एवं चमकती बिजलियां, वर्षा की फुहार का चित्रण हुआ है। श्रावण के चित्र में महल की छत पर मोर को नृत्य करते व आकाश में कुर्जा पक्षियों को वर्षा का आनंद लेते हुए दर्शाया है, महल के सम्मुख जलपूरित नदियों कों अंकित किया गया है। भाद्रपद में तेज़ बारिश का चित्रण हुआ है जहां शेर दहाड़ रहे है व हाथी पेड़ उखाड़ रहा है। इन दोनों चित्रों में नायक नायिका की भूमिका को अलग तरह से दर्शाया गया है, नायक बारिश से बचने वाले वस्त्र पहने हुए है जबकि नायिका ने अलग वस्त्र नहीं पहने हुए। श्रावण में नायक, नायिका को उपहार दे रहा है तथा भादो में नायिका, नायक को उपहार दे रही है।

आश्विन में पृष्ठभूमि में लोगों को नौ दुर्गा की पूजा करते दर्शाया है, तथा एक पुरुष को पशु बलि करते हुए दर्शाने के लिए तलवार को पशु के आगे उठाई हुई अवस्था में चित्रित किया गया है। नायक व नायिका महल के अंदर दायीं ओर अंकित हैं व महल में बांई ओर पंडित के साथ राजा को अपने राज्यों को देखने के लिए दौरे पर निकलने के लिए तैयार दर्शाया है।

मास कार्तिक में बहुत खुशी का वातावरण दिखाया गया है। दीपावली के कारण महल की छतों व झरोंको पर जलते हुए दियों की कतार को दर्शाया है। इस पावन अवसर पर तारों भरे आकाश के नीचे दो स्त्रियां नदी में स्नान कर रही हैं, महल के भीतर दो लोग पूजा अर्चना में लगे हुए हैं। नायिका, नायक को सफेद माला दे रही है, नायक को गुलाबी शॉल ओढ़े दिखाया है जो सर्दी के आगमन को दर्शाता है। पिछले चित्रों के

समान यहां भी नायक के वस्त्रों में परिवर्तन किया है परन्तु नायिका को सामान्य जैसा ही बनाया गया है। नायक, नायिका के दाईं ओर एक दम्पत्ति को दिखाया है जो जुआं खेलने में लीन हैं। इस चित्र में शरद ऋतु दर्शाने के लिए महल के अंदर आग का जलता हुआ स्टोव भी बनाया गया है, नायक का शॉल व आग का चित्रण कार्तिक से पौष मास तक समान रूप से हुआ है।

मार्गशीर्ष का चित्र उत्तर भारत में शुरुआती सर्दियों के मौसम को दिखाता है जब आसमान साफ नीला होता है। केशव दास ने इस मास को भगवान का सबसे प्रिय महीना बताया है। चित्र में चॉद व तारों से भरा आकाश बनाया गया है, बारहमासा के समस्त चित्रों में से केवल इसी चित्र में नायक, नायिका को हरियाले मैदान में नदी के किनारे दिखाया है, नदी कमल के फूलों से भरी हुई है व इसमें हंस का जोड़ा गाता हुआ दर्शाया गया है।

मास पौष में महल का आन्तरिक दृश्य है जहां नायक, नायिका के पास आग जलता हुआ स्टोव रखा हुआ है तथा दोनों ने ही शॉल ओढ़ रखा है। नायिका ने नायक को जाने से रोकने के लिए वस्त्रों को पकड़ा हुआ है तथा इनके दाईं ओर नायिका द्वारा नायक को पान खिलाते हुए चित्रित किया है। महल की छत पर एक रूठे हुए दम्पत्ति को एक दूसरे की तरफ पीठ मोड़े दर्शाया है, जो कविता के इस भाव को दर्शाता है कि सर्दी में दिन छोटे और रात बडी होती है तथा रूठने में असहनीय दुःख होता है।

माघ के इस मास में उत्तर भारत में ठंड के बाद हल्की गर्मी पड़ती है। इस चित्र में वसंत उत्सव का चित्रण हुआ है, एक पुरुष को नृत्य मुद्रा में दिखाया गया है इसके पास दो स्त्रियां चित्रित हैं जिसमें से एक ढोल बजा रही है व पृष्ठभूमि में मोर, कबूतर, कोयल को गायन में लीन है। नायिका द्वारा नायक को रोकते हुए दर्शाया है।

फाल्गुन के महीने में होलिका दहन के दृश्य है, जहां सभी के मुख पर उत्सव की खुशी को देखा जा सकता है। महल के बाहर के इस दृश्य में सभी के वस्त्र रंगे हुए हैं तथा महल के अंदर नायक, नायिका के साथ एक पुरुष व दो स्त्रियों को भी चित्रित किया गया है।

जोधपुर बारहमासा के इन चित्रों में नायक को लम्बा चुन्नटदार जामा पहनाया गया है, सिर पर लंबी पगड़ी है जिसे कहीं–कहीं कलगी व मोतीयों से सजा हुआ है। नायिका के सर पर पारदर्शी ओढ़नी बनाई गई है तथा ओढ़नी व वस्त्रों को विभिन्न प्रकार के अलंकरणों से सजाया गया है। समस्त आकृतियों को विविध प्रकार के सफेद मोतियों के आभूषण पहनाए गये हैं। इन चित्रों में महल को भी विभिन्न प्रकार के अलंकरणों से सजाया गया है। जोधपुर शैली के हाशियों में लाल व पीले रंग का प्रयोग किया जाता है किन्तु इन चित्रों के हाशियों को केवल लाल रंग से निर्मित किया है। इन हाशियों में एक और विशेषता है कि हर हाशिये में एक पुरुष व घोड़े को चित्रित किया है, पुरुष घोड़े की कमान थामे बैठा हुआ है, ये आकृतियां हाशिये की सीमा रेखा से बड़ी बनाई गई है तथा शरद ऋतु में इन दोनों के पास लकड़ी से आग जलती हुई चित्रित की है जो बड़ा सुन्दर संयोजन है। ऋतुओं के आधार पर चित्रित बारहमासा जिसे साहित्यिक कविता के आधार पर इतने सुन्दर रूप में प्रतिबिंबित किया गया ये आश्चर्य के साथ भारत के चितेरों की उत्कृष्टता का प्रमाण है जो अपना विशेष स्थान रखते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

i अल्बर्ट हॉल संग्रहालय में लिपिबद्ध

ii रामनाथ.मध्यकालीन भारतीय कलाएँ एवं उनका विकास,राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी,जयपुर,1973,पृ.स.9

iii शर्मा,लोकेश चन्द्र.भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास,गोयल पब्लिशिंग हाउस,मेरठ,2016,पृ.स.83

iv अग्रवाल,गिर्राज किशोर.कला और कलम,संजय पब्लिकेशन,आगरा,2019,पृ.स.129

v अग्रवाल,आर. ए..भारतीय चित्रकला का विवेचन, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस,मेरठ,2018,पृ.स.106

vi https://criticalcollective.in/07.04.2022

vii चतुर्वेदी,लक्ष्मीनिधि.महाकवि केशवदास कृत कवि–प्रिया,मातृ–भाषा मन्दिर, प्रयाग,1966,पृ.स.165

viii प्रताप,रीता.भारतीय चित्रकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी,जयपुर,2003,पृ.स.198

❖◆❖